JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/3

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ।

एवं-जाव-सव्वद्धा[1]

प०—पोग्गलपरियट्टा णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ-जाव अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणंताओ ओसप्पिणीओ ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ३६-३८

उ०—गौतम ! संख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी नहीं हैं।

असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी भी नहीं हैं, अपितु अनन्त अवसर्पिणी उत्सर्पिणी हैं।

इसी प्रकार सर्वकाल की अवसर्पिणी उत्सर्पिणी हैं।

प्र०—भगवन् ! पुद्गल परिवर्तनों की अवसर्पिणियाँ और उत्सर्पिणियाँ संख्यात हैं—यावत्—**अनन्त हैं ?**

उ०—गौतम ! संख्यात अवसर्पिणियाँ उत्सर्पिणियाँ नहीं हैं, असंख्यात नहीं हैं, अनन्त हैं।

तीतद्धाइसु पोग्गलपरियट्टाणं अणंतत्तं—

अतीत काल के पुद्गल परिवर्तनों का अनन्तत्व—

३०. प०—तीतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा अणंता पोग्गलपरियट्टा ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा अणंता पोग्गलपरियट्टा ।

एवं अणागतद्धा वि ।

एवं सव्वद्धा वि ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ३९-४१

३०. प्र०—भगवन् ! अतीत काल के पुद्गल परावर्तन क्या संख्यात थे, असंख्यात थे, या अनन्त थे ?

उ०—गौतम ! संख्यात पुद्गल परिवर्तन नहीं थे, असंख्यात नहीं थे, अनन्त थे।

इसी प्रकार अनागत काल के पुद्गल परिवर्तन होंगे।

इसी प्रकार सर्वकाल के पुद्गल परिवर्तन हैं।

अणागयकालस्स अतीतकालओ समयाधिकत्तं—

अतीत काल से अनागत काल का समयाधिकत्व—

३१. प०—अणागयद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ, असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, अणंताओ तीतद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ ।

अणागयद्धा णं तीतद्धाओ समयाहिया,
तीतद्धाणं अणागयद्धाओ समयूणा ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४२

३१. प्र०—भगवन् ! अतीत काल से अनागत काल क्या संख्यात हैं, असंख्यात हैं या अनन्त हैं।

उ०—गौतम ! अतीत काल से संख्यात नहीं हैं, असंख्यात नहीं हैं, अनन्त नहीं है।

अतीत काल से अनागत काल एक समयाधिक हैं।
अनागत काल से अतीत काल एक समय कम हैं।

सव्वद्धाए अतीतकालओ साइरेगदुगुणत्तं—

अतीत काल से सर्वकाल का कुछ अधिक दुगुनापन—

३२. प०—सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ-जाव-अणंताओ तीतद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ-जाव-नो अणंताओ तीतद्धाओ ।

सव्वद्धा णं तीतद्धाओ साइरेगदुगुणा,
तीतद्धाणं सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४१

३२. **प्र०—भगवन् ! अतीत काल से सर्वकाल क्या संख्यात हैं ?** —यावत्—**अनन्त हैं ?**

उ०—गौतम ! अतीत काल से सर्वकाल न संख्यात हैं—यावत्—**न अनन्त हैं।**

अतीत काल से सर्वकाल कुछ अधिक हैं।
सर्वकाल से अतीत काल कुछ कम हैं।

---

१ एकवचन के सूत्र ।

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com

JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 2/3

सव्वद्धाए अणागयकालओ थोवूणदुगुणत्तं—

३३. प०—सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ अणागयद्धाओ, असंखेज्जाओ अणागयद्धाओ, अणंताओ अणागयद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असंखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणंताओ अणागयद्धाओ ।

सव्वद्धा णं अणागयद्धाओ थोवूणदुगुणा ।
अणागयद्धा णं सव्वद्धाओ साइरेगे अद्धे ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४४

अनागत काल से सर्वकाल का कुछ कम दुगुनापन—

३३. प्र०—भगवन् ! अनागत काल से सर्वकाल क्या संख्यात हैं, असंख्यात हैं या अनन्त हैं ?

उ०—गौतम ! अनागत काल से सर्वकाल न संख्यात हैं, न असंख्यात हैं और न अनन्त हैं ।

अनागत काल से सर्वकाल कुछ कम दुगुना है ।
सर्वकाल से अनागत काल कुछ अधिक दुगुना है ।

पोग्गलपरियट्टस्स भेया—

३४. तिविहे पोग्गलपरियट्टे[1] पण्णत्ते, तं जहा—
(१) तीए,
(२) पडुप्पन्ने,
(३) अणागए ।

ठाणं अ. ३, उ. ४, सु. १९७ ।

पुद्गल परावर्त भेदों का प्ररूपण—

३४. पुद्गल परावर्त तीन प्रकार के कहे गए हैं, यथा—
(१) अतीत पुद्गल परावर्त,
(२) वर्तमान पुद्गल परावर्त,
(३) अनागत पुद्गल परावर्त ।

परमाणु पोग्गलाणं अणंताणंत पोग्गलपरियट्ट परूवणं—

३५. प०—एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा[2] भेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा[3] समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया ?

उ०—हंता गोयमा ! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा भेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीत मक्खाया ।

भग. स. १२, उ. ४, सु. १४

परमाणु पुद्गलों के अनन्तानन्त पुद्गल परावर्तों का प्ररूपण—

३५. प्र०—भगवन् ! इन परमाणु पुद्गलों के संयोग वियोग से अनन्तानन्त पुद्गल परावर्त जानने चाहिए, ऐसा कहा गया है ?

उ०—हाँ गौतम ! इन परमाणु पुद्गलों के संयोग वियोग से अनन्तानन्त पुद्गल परावर्त जानने चाहिए, ऐसा कहा गया है ।

पोग्गलपरियट्टस्स भेयसत्तग परूवणं—

३६. प०—कइविहे णं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

उ०—गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ।
तं जहा—

पुद्गल परावर्त के सात भेदों का प्ररूपण—

३६. प्र०—भगवन् ! पुद्गल परावर्त कितने प्रकार के कहे गये हैं ?

उ०—गौतम ! पुद्गल परावर्त सात प्रकार के कहे गये हैं । यथा—

---

१ "पोग्गलपरियट्टे" त्ति पुद्गलानां-रूपिद्रव्याणामाहारक वर्जितानां औदारिकादिप्रकारेण ग्रहणतः एक जीवापेक्षया परिवर्तनं-सामस्त्येन स्पर्शः पुद्गलपरिवर्तः, स च यावता कालेन भवति, स कालोऽपि पुद्गल परिवर्तः, स च यावता कालेन भवति, स कालोऽपि पुद्गलपरिवर्तः सचानन्तोत्सर्पणिण्यवसर्पिणीरूप इति ।

२ "साहणणत्ति" प्राकृतत्वात् संहननम्-संघातः भेदश्च वियोजनम् तयोः अनुपातः योगः संहननभेदानुपातः, तेन सर्वपुद्गलद्रव्यैः सहपरमाणूतां संयोगेन वियोगेन चेत्यर्थः ।

३ "अनन्तेनगुणिता अनन्ता अनन्तानन्ताः ।
एकोऽपि हि परमाणु द्व्यणुकादिभिरनन्ताणुकान्तै र्द्रव्यैः सह संयुज्यमानः अनन्तान् परिवर्तन लभते, प्रतिद्रव्यं परिवर्तभावात् अनन्तत्वाच्च परमाणूनाम् प्रतिपरमाणु चानन्तत्वात् परिवर्तानां परमाणु पुद्गले परिक्षनिनामनतत्व द्रष्टव्यम् पुद्गलैः—पुद्गल-द्रव्यैः सहपरिवर्ताः— परमाणूनां मिललानि पुद्गलपरिवर्ताः ।

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com

JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 3/3

(१) ओरालिय-पोग्गलपरियट्टे,
(२) वेउव्विय-पोग्गलपरियट्टे,
(३) तेया पोग्गलपरियट्टे,
(४) कम्मा पोग्गलपरियट्टे,
(५) मण पोग्गलपरियट्टे,
(६) वइ पोग्गलपरियट्टे,
(७) आणुपाणु पोग्गलपरियट्टे।

—भग. स. १२, उ. ४, सु. १५

(१) औदारिक पुद्गल परावर्त,
(२) वैक्रिय पुद्गल परावर्त,
(३) तेजस पुद्गल परावर्त,
(४) कार्मण पुद्गल परावर्त,
(५) मन पुद्गल परावर्त,
(६) वचन पुद्गल परावर्त,
(७) श्वासोच्छवास पुद्गल परावर्त।

संवच्छाराणं संखा लक्खणं च—

३७. प०—ता कइ णं संवच्छरे ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ०—ता पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा—

(१) णक्खत्त संवच्छरे, (१) जुगसंवच्छरे, (३) पमाण-संवच्छरे, (४) लक्खणसंवच्छरे, (५) सणिच्छर-संवच्छरे।[1] —सूरिय. पा. १०, पाहु. २०, सु. ५४

पंचण्हं संवच्छराणं लक्खणाइं—

गाहाओ—

णक्खत्त संवच्छरं लक्खणं—

३८. समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति, समगं उडु परिणमंति।
नच्चुण्हं नाइसीए, बहु उदए होइ नक्खत्ते ॥१॥

चंदसंवच्छर लक्खणं—

ससि समग पुण्णमासिं, जोइं ता विसमचारि णक्खत्ता।
कडुओ बहु उदगवओ, तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥

उडु (कम्म) संवच्छर लक्खणं—

विसमं पवालिणो परिणमंति, अणउसु दिंति पुप्फलं।
वासं न सम्मवासइ, तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥

आइच्च संवच्छर लक्खणं—

पुढवि-दगाणं च रसं, पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे।
अप्पेण वि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सस्सं ॥४॥

अभिवड्ढिय संवच्छर लक्खणं—

आइच्चतेय तविया, खण-लव-दिवसा उऊ परिणमंति।
पूरेइ रेणु-थलयाइं, तमाहु अभिवड्ढिय जाण[2] ॥५॥

—सूरिय. पा. १०, पाहु. २०, सु. ५८

संवत्सरों की संख्या और उनके लक्षण—

३७. प्र०—संवत्सर कितने कहे हैं ?

उ०—संवत्सर पाँच कहे गये हैं, यथा—

(१) नक्षत्र संवत्सर, (२) युग संवत्सर, (३) प्रमाण संवत्सर, (४) लक्षण संवत्सर, (५) शनैश्चर संवत्सर।

पाँच संवत्सरों के लक्षण—

गाथार्थ—

नक्षत्र संवत्सर के लक्षण—

३८. जिस संवत्सर में सभी नक्षत्र योग करते हैं और सभी ऋतुएँ परिणमित होती हैं उसमें न अधिक गरमी और न अधिक शरदी होती है किन्तु वर्षा अधिक होती है। वह नक्षत्र संवत्सर है।

चन्द्र संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर की सभी पूर्णिमाओं में चन्द्र विषमचारी नक्षत्रों से योग करे, कडवे पानी की वर्षा अधिक हो उसे चन्द्र संवत्सर कहा है।

ऋतु (कर्म) संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर में (जिस वनस्पति की अंकुरित-पल्लवित होने की जो ऋतु हो उसमें न होकर) अन्य ऋतु में अंकुरित हो, पत्र-पुष्प-फल लगे तथा वर्षा पर्याप्त न हो, उसे ऋतु (कर्म) संवत्सर कहा है।

आदित्य संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर में पृथ्वी, जल, और पुष्प-फलों को रस आदित्य देता है तथा अल्प वर्षा से धान्य पर्याप्त उत्पन्न होता है उसे आदित्य संवत्सर कहा है।

अभिवर्धित संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर में सूर्य के तेज से तप्त क्षण-लव-दिन होने पर सारी पृथ्वी वर्षा के जल से तप्त हो जाती है तथा सभी ऋतुएँ यथासमय परिणमित होती है—उसे अभिवर्धित संवत्सर कहा है—ऐसा जानो।

१ ठाणं अ० ५, उ० ३, सु० ४६०।
२ (क) ठाणं ५, उ० ३, सु० ४६०।
(ख) जंबु० वक्ख० ७, सु० १५१।

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com